Introduction

क

प्राक्कथन

सम्प्रति साहित्य जगत में यह अनुभव किया जा रहा कि प्राचीन सामग्री का विलय उसको सुरक्षित रखने वाले युग के साथ बहुत शीघ्रता से हो रहा है । अत: मूल्यांकन सहित उसको सामने लाने की, [illegible] उसी की सापेक्षता में उत्तरदायित्व भी इसी युग का है । ऐसे प्रयासों में इतिहास के लिए तथ्यों का संकलन तो अनिवार्य रूप से होता है, प्राय: इनके माध्यम से उसकी मूल चेतना-धारा को हृदयंगम करने के सुस्पष्ट संकेत अथवा प्रकट प्रमाण भी मिलते हैं जो इतिहास को स्फीति और सजीवता प्रदान करते हैं । प्रस्तुत शोध-प्रबंध इसी दिशा में किये गये एक लघु प्रयास का परिणाम है, जो भगवंतराय के राजनीतिक और साहित्यिक कृतित्व एवं उनके आश्रयकाल तथा व्यक्तित्व से प्रभावित रचनाओं को मूल्यांकन सहित प्रकाश में लाता है ।

उत्तर मुगलकालीन भारत के इतिहास में भगवंतराय का विशिष्ट स्थान है । साधारण हैसियत के परिवार में पैदा होकर उन्होंने अपनी व्यक्तिगत योग्यता के बल पर अंतर्वेद के एक बड़े भूभाग पर अपना आधिपत्य स्थापित किया, जिसमें फतेहपुर, इलाहाबाद, कानपुर, रायबरेली, प्रतापगढ़ और बुंदेलखंड के कुछ क्षेत्र सम्मिलित थे । इनकी वीरगति संवत् १७९२ विक्रमी में हुई । इनके व्यक्तिगत गुण एवं आदर्श लोक-रंजक थे एवं इसी की साधना में उन्होंने अपनी सारी प्रतिभा और शक्ति लगा दी । फलस्वरूप जन-मानस पर उनका प्रभाव इतना गहरा पड़ा कि उनकी स्मृति लोक-चेतना में स्थायी छाप छोड़ गई । आज भी इन क्षेत्रों में ऐसे लोग मिल जायेंगे जो श्रद्धासिक्त वाणी से भगवंतराय की कीर्ति का स्मरण करते हैं । भगवंतराय न केवल कुशल राजनीतिज्ञ और वीर थे वरन् सिद्धहस्त कवि और मंजे हुए संगीतज्ञ भी थे । इन गुणों ने उनको ~~प्रतिष्ठा और पद का~~ लोक-नायक के पद पर समासीन किया । उनके समकालीन और परवर्ती अनेक कवियों की रचनाओं में उनका यह पक्ष उभर कर सामने आता है । एक ओर शुद्ध हृदय के राग से प्रेरित होने के कारण जहां ये रचनायें उत्कृष्ट काव्य बन सकीं हैं वहीं लोक चेतना का संवहन करने के कारण अपना ऐतिहासिक महत्व भी प्रतिपादित करती हैं । प्रस्तुत प्रबंध की सामग्री का संकलन करते समय मेरे मस्तिष्क में आलोच्य रचनाओं की यह विशेषता बार बार कौंध जाती थी - पता नहीं अपने प्रतिपादन में इसका निर्देशन करने में मुझे किस सीमा तक सफलता मिली है ?

यह भी एक सुखद संयोग ही है कि बचपन में पिताजी से भगवंतराय की कहानियां सुनकर मैंने जिसे श्रद्धा और जिज्ञासा से देखा उसी भगवंतराय के राजनीतिक और साहित्यिक कृतित्व के सम्बन्ध में शोध का काम करने का मुझे अवसर मिला। इस विषय के लिए विरासत में मिली रागात्मक अनुकूलता मुझे अन्तर्वेद, विशेषरूप से असोथर क्षेत्र में, गांव गांव ले गयी जहां एक-एक पंक्ति और छंद के लिए मैंने कितने ही अपरिचित द्वार खट खटाए; लिखित, अलिखित, स्पष्ट और उलझी हुई, संबद्ध, असंबद्ध सामग्री जुटायी। इन सूत्रों का प्रबंध में यथास्थान उल्लेख है।

इस प्रबंध की सामग्री के तीन स्रोत हैं : इतिहासों में उपलब्ध सामग्री, भगवंतराय तथा उनके आश्रित कवियों की रचनायें, तथा अन्तर्वेद में प्रचलित अनुश्रुतियां। इन तीनों स्रोतों से प्राप्त सामग्री का वैज्ञानिक विवेचन का प्रबन्ध में ऐसे निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं जो मौलिक होने के साथ ही इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। भगवंतराय के बारे में जो रचनायें कवियों ने कीं वे विशेष महत्व की हैं। साधारणत: राजाओं के आश्रित कवियों ने उनके मनोरंजन और उनकी मुंह देखी प्रशस्ति में आसमान के कुलाबे मिलाये हैं, इनमें तथ्यों पर कम प्रशस्ति पर अधिक ध्यान दिया गया है। इन कारणों से उनकी ऐतिहासिकता संदिग्ध हो गयी है, काव्य-संबंधी-न्यूनताओं की बात तो अलग है। इसके विपरीत अनुमान यह लगता है कि भगवंतराय ने अपने जीवनकाल में अपनी प्रशस्ति में रचना करने के लिए कवियों को प्रोत्साहित नहीं किया। उनके बारे में अधिकांश रचना उनकी मृत्यु के बाद की गयी। इससे उन काव्यों में रागात्मकता के साथ ही तथ्यों के प्रति निरपेक्ष स्पृहणीयता बनी रही। यह बात महत्व की है क्योंकि इससे जहां काव्य विशुद्ध अन्त:प्रेरणा के वशीभूत होकर लिखा गया वहीं उसमें तथ्यों के प्रति भी अन्याय नहीं हुआ। भगवंतराय के जीवन और कार्यों के बारे में इनसे बड़ी भरोसे की सामग्री मिली है। हिन्दी कवियों की इतिहास निष्ठा का यह ज्वलंत उदाहरण है।

इस प्रबंध के लिए जहां तक पूर्व प्रकाशित सामग्री का प्रश्न है वह नहीं के बराबर थी। शिवसिंह सेंगर, सर जार्ज ग्रियर्सन, मिश्रबंधु और शुक्ल जी ने अपने इतिहासों में भगवंतराय का नाम आदर के साथ उल्लिखित किया है। सामग्री के अभाव में इन विद्वानों से उल्लेख से अधिक की अपेक्षा भी नहीं की जा सकती थी। इसी प्रकार इन इतिहासकारों ने भगवंतराय के आश्रित कवियों में नेवाज़, भूधर, सारंग, शंभुनाथ, श्यामलाल, नाथ, मल्ल, कवीन्द्र, सदानन्द और सुखदेव मिश्र के नाम तो अवश्य गिनाये

परन्तु सदानन्द की ' रासा भगवंतसिंह का ' नामक रचना को छोड़कर शेष सभी कवियों के भगवंतराय के लिए लिखे गये एक-एक दो-दो छंदों से अधिक रचनायें नहीं दी । इनमें से जो प्रसिद्ध कवि थे उनके भी किसी ग्रन्थ का पता नहीं चलता जो इनके आश्रय काल में लिखा गया हो ।

इस प्रकार इन विद्वानों की सामग्री एक संकेत मात्र देती है जिसका अनुसरण करके हमने भगवंतराय की रचनाओं को अलंकार रत्नाकर, श्रृंगार संग्रह, दिग्विजय भूषण और नागरी प्रचारिणी सभा की खोज रिपोर्टों से ढूंढ कर निकाला है । इसके अतिरिक्त लखनऊ के सादतगंज निवासी कविश्री विमलेश जी और बड़ौदा के ध्रुपद गायक श्रीभरत व्यास से भी कुछ छंद प्राप्त किये हैं । देव के अतिरिक्त भगवंतराय के आश्रय में अन्य अनेक कवियों ने रचनाएं की । इनमें से गोपाल, मुहम्मद, चतुरेश, इन्द्र, कण्ठ और हेम नामक छह ऐसे कवि उनके आश्रय में थे जिन्हें इस प्रबन्ध के द्वारा सर्वप्रथम प्रकाश में लाया जा रहा है । इनको लेकर भगवंतराय के आश्रित कवियों की संख्या १७ हो जाती है। उपर्युक्त ६ कवियों में से मुहम्मद कवि का ' भगवंतराय खीची का जंगनामा ' और गोपाल कवि की ' भगवंतरायविरुदावली ' का अभी तक हिन्दी जगत के सम्मुख उल्लेख नहीं हुआ था । इस सामग्री के अतिरिक्त रीतिकाल के संग्रह ग्रन्थों में भगवंतराय के प्रति लिखे गये कुछ छंद प्राप्त हुए हैं, जिनमें कवि नाम की छाप नहोने से उन्हें ' अज्ञात ' कवियों का दाय माना गया है ।

भगवंतराय के मंडल के कवियों का अध्ययन करते समय उनकी उपलब्ध रचनाओं की परीक्षा करने का भी प्रयत्न किया गया है । इस प्रकार पूर्वोल्लेखों की भी परीक्षा हो गयी है । इस कार्य में अनेक हस्तलिखित ग्रन्थ देखने पड़े हैं । सुखदेव नामक (कवि ?) कवियों के फाजिल अली प्रकाश, अध्यात्म प्रकाश, गुरु महिमा, ज्ञान प्रकाश, रसदीपक, छंदोविचार पिंगल और मदन रसाणव हैं । शंभुनाथ त्रिपाठी की वैताल पचीसी, दलपतिराय वंशीधर कृत अलंकार रत्नाकर, शंभुनाथ मिश्र कृत अलंकार दीपक और उदयनाथ कवीन्द्र कृत रति विनोद चंद्रिका भी उल्लेखनीय हैं । कई ग्रन्थ जो पुस्तकालयों में या ग्रन्थ स्वामियों(खोज रिपोर्टों में उल्लिखित पते के अनुसार) के पास नहीं मिल सके उनके लिए खोज रिपोर्टों के विवरण तक ही सीमित रहना पड़ा है । कवियों की जीवनी लिखते समय और उनकी रचनाओं को स्थिर करने में इन सबसे यथास्थान सहायता ली गई है । इस दिशा के कार्य में भूधर कवि की ' ध्यान बत्तीसी ' नामक एक अज्ञात रचना देखने को मिली है ।

लेखक को भगवंतराय के मंडल के अज्ञात कवियों एवं उनकी रचनाओं की खोज में असोथर के श्री शिवनारायण सिंह ने बहुत अधिक सहायता की है । हस्तलिखित ग्रन्थों के लिए नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, सरस्वती पुस्तकालय रामनगर वाराणसी, बृजराज पुस्तकालय गंधोली, जिला सीतापुर, मौरावां पुस्तकालय, जिला उन्नाव तथा गायकवाड रिसर्च इंस्टिट्यूट, बड़ौदा का आश्रय लेना पड़ा है ।

भगवंतराय की जीवनी और उनके प्रति लिखी गई रचनाओं के ऐतिहासिक महत्व के विवेचन के लिए तत्कालीन इतिहास का अध्ययन अनिवार्य हो गया है । डा० आशीर्वादी लाल श्रीवास्तव ने अपने ग्रन्थ `फर्स्ट टू नवाब्स आफ अवध` में भगवंतराय के ऊपर पर्याप्त प्रकाश डाला है । परन्तु इतिहास के मूल स्रोतों को आलोडित करना ही लेखक ने इष्ट किया । इस सम्बन्ध में इलियट और डाउसन के भारत इतिहास के ८वें भाग में तारीखे हिन्दी और सादत जावेद, सैरे मुताखरीन के गुलाम मुहम्मद कृत अंग्रेजी अनुवाद और वारिदकृत मूल फारसी ग्रन्थ मीरातुल वारिदात के अतिरिक्त पेशवा को भेजे गये मराठा कर्मचारियों के मराठी ... पत्रों के नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं । मीरातुल वारिदात की हस्तलिखित प्रति रघुवीर पुस्तकालय, सीतामऊ में प्राप्त थी अत: इस की प्रतिलिपि के लिए लेखक को वहीं जाना पड़ा ।

उपर्युक्त सामग्री का अध्ययन प्रस्तुत प्रबन्ध में दो खंडों में प्रस्तुत किया गया है । प्रथम खंड के तीन अध्यायों का विवेचन भगवंतराय पर केंद्रित है और दूसरे खंड के चार अध्याय उनके मंडल के कवियों पर । ८वां अध्याय उपसंहार रूप में प्रबंध की उपलब्धियों को प्रस्तुत करता है । अंत में पांच परिशिष्टों में अध्ययनार्थ खोजी गई अप्रकाशित और अज्ञात रचनाओं को संकलित कर दिया है एवं परिशिष्ट ६ में सहायक ग्रन्थों की सूची दी गई है ।

प्रस्तुत प्रबन्ध के प्रथम अध्याय (पृष्ठभूमि) में भगवंतराय के साहित्यिक और राजनैतिक मंडल की स्थापना का प्रयास पहली बार किया जा रहा है । उपलब्ध प्रकाशित ग्रन्थों से प्राप्त सूचनाओं और उनका सम्यक् विवेचन कर इस मंडल की उदात्त सांस्कृतिक परम्पराओं पर प्रकाश डालने के अतिरिक्त आलोच्य विषय से उनका सम्बन्ध निर्धारण भी एक नवीन प्रयास है । भगवंतराय के इतिहास और उस समय की साहित्यिक रचनाओं के वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन की दृष्टि से इसकी उपादेयता स्पष्ट और महत्वपूर्ण है । इसके साथ ही इस अध्याय में उस काल की राजनीतिक, धार्मिक और साहित्यिक परिस्थितियों का भी विवेचन कर विषय को व्यापक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में उपस्थित

किया गया है ।

द्वितीय अध्याय - भगवंतराय का वंश और जीवनी - मैं मनुभाई मेहता कृत ` हिन्द राजस्थान ` , देसाई कृत ` चौहान कुल कल्पद्रुम ` मुहणोत नैणसी की ख्यात, देव कृत` जैसिंह विनोद ` एवं असोथर के सर्जे का उपयोग वंश परिचय के लिए तथा फारसी के मूल एवं अनुवाद इतिहास ग्रन्थों, पेशवा दफ्तर के पत्रों, कवियों की रचनाओं एवं स्थानीय अनुश्रुतियों के माध्यम से भगवंतराय की जीवनी को पहली बार प्रामाणिक रीति से प्रस्तुत किया जा रहा है ।

तीसरे अध्याय - भगवंतराय का कृतित्व - मैं भगवंतराय की दबी-छिपी रचनाओं को खोज कर उनका अध्ययन व मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है । स्तोत्र साहित्य की परम्परा और मध्यकालीन हिन्दी कविता में उनके स्वरूप पर नवीन सिरे से प्रकाश डालने का प्रयत्न किया गया है । काव्य-विवेचन में कवि के जीवन और कृतित्व में बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव का निर्धारण अपनी विशेषता रखता है । थोड़ी सी रचनाओं के माध्यम से कवि की सामर्थ्य व उसके काव्य के दिशा-निर्देशन का पूरा प्रयत्न किया गया है, जो पहली बार विवेचन का विषय बनने के अतिरिक्त नवीनता का भी परिचय देता है ।

(खंड दो) चतुर्थ अध्याय - मंडल के कवियों का वृत्त - मैं कवियों से संबंधित सूचना के लिए मूल स्रोतों का अध्ययन और परीक्षण किया गया है । जहां कोई आधार नहीं मिल सका है केवल वहीं इतिहासकारों की दी हुई सूचना तक अपने को सीमित रखना पड़ा है । इस प्रसंग में देव के नव प्राप्त ग्रन्थ ` जैसिंह विनोद ` के आधार पर उनकी देशव्यापी यात्रा की बात का खंडन एवं उनके स्वभाव एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है ।

सुखदेव नाम के कवियों(कवि ?) की समस्त उपलब्ध रचनाओं एवं उनके आश्रय-दाताओं के समय तथा काल-क्रम की परीक्षा करके, इतिहास ग्रन्थों की भ्रमपूर्ण मान्यता का खंडन करते हुए इस नाम के तीन या कम से कम दो कवियों की स्थापना की गई है । इसी प्रकार मूधर नाम के दो या तीन समकालीन जैन कवियों से अलग करके आलोच्य मूधर कवि को सामने लाया गया है । नेवाज नाम के चार कवियों में शकुंतला नाटक के कर्ता नेवाज को एक और शेष तीन नेवाज नामक कवियों को एक ही व्यक्ति होने का अनुमान भी कवि की अन्तर्प्रकृति के आधार पर मौलिक रीति से दिया गया है । मुहम्मद, चतुरेश और गोपाल इन तीन कवियों का परिचय इस प्रबन्ध के पूर्व कहीं भी नहीं मिलता है । यह अंशसर्वथा नवीन है ।

पंचम अध्याय - रचनाओं का वर्ण्य विषय - में आलोच्य रचनाओं, जैसिंह विनोद, भगवंतराय खीची का जंगनामा, रासा भगवंतसिंह एवं भगवंत विरुदावली का विस्तार से परिचय दिया गया है। रासा भगवंतसिंह को छोड़कर अभी तक इनमें से कोई भी रचना प्रकाश में नहीं आई है,इसलिए यह अंश भी नवीन है। इन आलोच्य रचनाओं के अतिरिक्त, मंडल के कवियों की उन रचनाओं का परिचय भी संक्षेप में निबद्ध कर दिया गया है जो अप्रकाशित हैं एवं इतिहास ग्रन्थों में जिनका उल्लेख मात्र ही हुआ है।

छठे अध्याय - काव्य रूप एवं काव्य सौष्ठव - में विनोद, जंगनामा, विरुदावली, रासा एवं मुक्तक के काव्य रूप पर प्रकाशडाला गया है। इसमें जंगनामा और विरुदावली के काव्य रूपों पर प्रकाशडालने के लिए नई सामग्री का उपयोग किया गया है। `सामान्य विरुद लक्षणम्` के लक्षणों की सापेक्षता में हिन्दी की हिम्मत बहादुर विरुदावली एवं भगवंत विरुदावली को लोक-प्रचलित विरुदों की परम्परा से ही अनुप्राणित होने का रहस्य भी इसके पहले नहीं उद्घाटित हुआ है। इसी अध्याय में श्रृंगार और वीर इन दो प्रमुख रसों की दृष्टि से उनका साहित्यिक सौंदर्य उद्घाटित किया गया है। श्रृंगार संबंधी देव का सैद्धान्तिक दृष्टिकोण चूंकि सामने था इसलिए उसी को विवेचन का आधार बनाया गया है।

सप्तम अध्याय - इतिहास निरूपण - में कवियों की रचनाओं को आधार बनाकर इतिहास और अनुश्रुतियों के साथ इन्हें समन्वित किया गया है। यह अंश इतिहास की दृष्टि से नवीन और मौलिक है। प्रबंध के इस अध्याय से हिन्दी कवियों की इतिहास-निष्ठा पर प्रकाश पड़ता है, एवं इतिहास लेखकों के लिए इनका महत्व प्रतिपादित होता है।

यह तो हुआ प्रबन्ध के विषय के बारे में। इसके लिखने के लिए हमें कई सूत्रों से सामग्री मिली, अनेक विद्वानों से पथप्रदर्शन मिला। उनके प्रति विनम्रता पूर्वक कृतज्ञता ज्ञापन कर्तव्य हो जाता है। सर्वप्रथम मैं श्रद्धेय प्रो० कुंवर चन्द्र प्रकाशसिंह के समक्ष विनयावनत हूं जिन्होंने इस विषय पर शोधकार्य करने की स्वीकृति देने, बड़ौदा विश्वविद्यालय से छात्रवृत्ति दिलाकर मेरी हर प्रकार से सहायता की। उनके विद्वता पूर्ण निर्देशों ने समय-समय पर मेरा पथ-प्रदर्शन तो किया ही, साथ ही आचार्य पं० नन्द दुलारे बाजपेयी, आचार्य डा० नगेन्द्र तथा आचार्य डा० भगीरथ मिश्र के सम्पर्क

में ~~उपस्थित~~ता कर मेरी अनेक शंकाओं का समाधान कराने में मेरी सहायता की । इन सभी विद्वानों के स्नेह-सौहार्द्र का भोगी बनकर मैंने अपने भीतर मनोबल अनुभव किया है ।

इस अवसर पर मैं आचार्य पं० विश्वनाथ प्रसाद मिश्र का सश्रद्धा नामस्मरण करता हूं जिन्होंने सर्वप्रथम इस विषय पर शोध-कार्य की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया था । महाराजा कुमार डा० रघुवीर सिंह ने इस प्रबन्ध के इतिहास से सम्बंधित अंशों के विवेचन के लिए जितनी आत्मीयता से मेरा पथ-प्रदर्शन एवं पुस्तकों से मेरी सहायता की है, उस आभार को प्रकट करने के लिए मेरी दृष्टि से 'कृतज्ञता ' बहुत हल्का शब्द है ।

मैं असोथर के श्री शिवनारायण सिंह के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करता हूं, जिनके सहयोग के बिना यह सामग्री मेरे हाथ शायद ही लग पाती । उन सभी पुस्तकालयों के अध्यक्षों का भी मैं कृतज्ञ हूं जहां जाकर मैंने इस प्रबंध की सामग्री टटोली है । महाराज विभूति नारायण सिंह राम नगर वाराणसी के सामने मैं विशेषरूप से श्रद्धा-वनत हूं, जो मेरी सुविधा का स्वयं ध्यान रखते थे । व्रजराज पुस्तकालय गंधौली की हस्तलिखित पुस्तकें लखनऊ में ही मंगवा देने के लिए मैं डा० व्रज किशोर मिश्र का भी मैं हृदय से आभारी हूं ।

मैं डा० उदित नारायण सिंह को इस कार्य की समाप्ति पर प्रणाम करता हूं जो भ्रातृतुल्य स्नेह से मुझे इस कार्य को शीघ्र पूरा करने के लिए निरंतर कोंचते रहे हैं । भाई ध्रुवनाथ के न चाहने पर भी मैं इस पंक्ति में उनका नाम लिखने से अपने को नहीं रोक पा रहा हूं ।

अंत में मैं बड़ौदा विश्व विद्यालय के भूतपूर्व अध्यक्ष कलासंकाय प्रो० कंटक एवं वर्तमान अध्यक्ष डा० आई०पी० देसाई एवं उपकुलपति महोदय डा० जे०एम० मेहता का हृदय से आभारी हूं, जिन्होंने उदारतापूर्वक अनेक अवसरों पर मेरी सहायता की है ।

-महेन्द्रप्रताप सिंह